

ग्रसाथ।रण

## EXTRAORDINARY

भाग I—जण्ड 1

PART I-Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

## PUBLISHED BY AUTHORITY

सं । 🕊

नई विल्लो, शुक्रवार, नवम्बर 12, 1971/कार्तिक 21, 1893

No. 1911

NEW DELHI, FRIDAY, NOVEMBER 12, 1971/KARTIKA 21, 1893

इस भाग में भिन्न पूष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह झलग संकलन के रूप में रखा जा सके। Seprate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

## MINISTRY OF FOREIGN TRADE

PUBLIC NOTICE

IMPORT TRADE CONTROL

New Delhi, the 12th November 1971

Subject.-Import of Prototypes.

No. 156-ITC(PN)/71.—Attention is invited to the procedure for submission of applications for import of proto-types by actual users as contained in paragraph 98 of Chapter IV of the Import Trade Control Hand Book of Rules and Procedure, 1971.

2. It has been decided that applications for import of prototypes (not exceeding 2 units) in the case of small scale industrial units, for a value upto Rs. 12,000 (c.i.f.) may be considered by the regional licensing authorities concerned on the recommendation of the sponsoring authorities. Accordingly, the following subparagraph may be deemed to have been inserted after sub-paragraph (4) under the

aforesaid paragraph 98 of the Import Trade Control Hand Book of Rules & Procedure, 1971:—

"(5) Notwithstanding the provision contained in sub-paragraph (3) above, applications from small scale industrial units for import of prototypes (not exceeding 2 nos.) for a total value upto Rs. 12,000 (c.i.f.) will be considered by the regional licensing authorities concerned on the recommendation of the sponsoring authorities. The sponsoring authorities will not be required to forward such applications to the DC(SSI), New Delhi."

Sd./- M. M. SEN, Chief Controller of Imports and Exports.

विदश व्यापार मंत्रालय

## म्रायान ज्यापार नियंत्ररा

मार्वे जितक सूवना नई दिल्ली, 12-11-1971

विषय: मुल प्रतिरुपी का भ्रायात

156 श्राई०टी०सी० (पी०एन०)/71 स्रायात व्यापार नियंत्रण नियम तथा कियाविधि की हैंड बुक, 1971 के श्रध्याय 4की कंडिका 98 में यथा निहित वास्तविक उपयोक्तास्रों द्वारा मूल प्रतिरूपों के श्रायात के लिए श्रावेदन पत्र प्रस्तुत करने की कियाविधि की स्रोर ध्यान श्राकुष्ट किया जाता है।

- 2. इस बात का निश्चय किया गया है कि लधु उद्योग एकको के मामलें में 12,000 ६० (लागत बीमा भाड़ा) मूल्य तक के मूल प्रतिरुनें (वो से अधिक नहीं) के श्रायात के लिए श्रावेदन पत्नों पर्में संबद्ध क्षेत्रीय लाइसेस प्राधिकारियों द्वारा प्रायोजक प्राधिकारियों की संस्तुति के श्राधार पर विचार किया जाए। तद्नुसार श्रायात क्यापार नियंत्रण, नियम तथा कियाविधि की हैं डबुक, 1971 की पूर्वेक्त कंडिका 98 में उपकंडिका (4) के बाद निम्नलिखित उपकंडिका निविध्ट की गई समझी जाए:—
- "(5) उपर्युक्त उपकंडिका (3) में निहत व्यवस्था के होतें हुए भी लवु उद्योग एकको द्वारा 12,000 ६० (लागत बीमा भाड़ा) मूल्य तक के मूल प्रतिरुपों (दो से प्रधिक महीं) के प्रायात के लिए दिए गए प्रावेदन पत्नों पर संबद्ध क्षेत्रीय लाइसेंप प्राधिकारियों द्वारा प्रायोजक प्राधिकारियों की संस्तुति के ग्राधार पर विद्यार किया जाएगा। प्रायोजक प्राधिकारियों के लिए यह ग्रावश्यक नहीं होगा कि वे ऐसे ग्रावेदन पत्न विकास ग्रायुक्त (लबु उद्योग) नई दिल्ली को ग्रग्रनारित करें।"

एम० एम० सेन, मुख्य नियंत्रक, श्रायात निर्यात ।